9928/30/6 | Vikas Kumar Meena

Test-1 (2023)

दृष्टि The Vision

मूल्यांकित उत्पुस्तिका

खण्ड - क

ऑनलाइन

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये:

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

10 × 5 = 50

→ अमीर खुसरो हिंदी के इतिहास में प्रारंभिक स्तर पर महत्वपूर्ण कवि रहे हैं। उन्होंने भारत में विकसित होती हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप को अपनी रचनाओं में मिश्रित रूप में आत्मसात किया है। अमीर खुसरो खड़ी बोली हिंदी के प्रथम कवि हैं।

→ अमीर खुसरो के लेखन शैली में खड़ी बोली हिंदी का वह आधुनिक स्वरूप मिलता है, जो वर्तमान में प्रचलित है।

" ~~जेल खिचड़ी~~ " एक थाल मोती से भरा...

→ खुसरो को भविष्य की भाषा विकास का अच्छा ज्ञान था। इसी आधार पर उनके काव्य वर्तमान से सुसंगत हैं।

" खीर बनाई जतन से, चरखा दिया चला,
आकर कुत्ता खा गया, बैठी ढोल बजा।।"

→ खुसरो ने कई जगह ब्रजभाषा, अवधी, खड़ी बोली हिंदी का मिश्रित प्रयोग भी किया है:

(Examiner's marginal remarks: अधिकांश अच्छे हैं। लेखन-शैली अच्छी है। भाषा प्रवाहपूर्ण है। भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं। उदाहरण अच्छा है। स्रोतों का उद्धरण/प्रस्तुतीकरण ... ; 1 4 3/4)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

E-51

Scanned with OKEN Scanner

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

" मेरा मोसे मान बढ़ावत, x x x x

x x x x x न सखी सीसा ।।"

→ " खुसरो दरिया प्रेम का, उलटी वाकी धार,

उतरा सो है डूब गया, जो डूबा सो पार ।।"

उक्त बिंदुओं के आधार पर खुसरो जनमानस के कवि ठहरते हैं, 13 एवं 14वीं शताब्दी के समय खुसरो भारतीय भाषाओं के विकसित स्वरूप को आत्मसात कर रहे थे, जो कि आश्चर्यजनक एवं प्रशंसनीय है।

5/10

खड़ी बोली की कुछ गद्यिक प्रवृत्तियों को भी स्थापित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Scanned with OKEN Scanner

(ख) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

लोकमान्य तिलक मराठी बोली प्रधान क्षेत्र से ~~[struck]~~ ताल्लुक रखते थे। प्रायः उनका मानना था कि किसी राष्ट्र के सभी व्यक्तियों को एकजुट करने और राष्ट्रवादी चेतना प्रसारित करने में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

उनके अनुसार हिंदी संपूर्ण भारत में स्वतंत्रता ~~के प्रति~~ प्राप्ति के लिए एकजुटता का संदेश प्रसारित कर सकती है।

इसी आधार पर उन्होंने 'हिंदी-केसरी' पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया और जन सामान्य में हिंदी भाषा के प्रति जागरुकता एवं आत्मीयता का भाव पैदा किया।

तिलक के अनुसार कोई भी क्रांति या संघर्ष को संपूर्ण राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने के लिए एक ऐसी भाषा का होना अनिवार्य है, जो देश की जनमानस हेतु सुग्राह्य, सरल और सामासिकता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिए हुए हो। चूंकि भारत का अधिकांश भाग हिंदी बोलता और समझता भी था साथ ही हिंदी में अनुकूलन का भी गुण था। इसी कारण उन्होंने सभाओं, सम्मेलनों में, उत्सवों, त्योहारों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

भारतीय संदर्भ में हिंदी के विकास हेतु अनेक व्यक्तियों ने योगदान दिया है; परंतु राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान अद्वितीय है।

पुरुषोत्तमदास टंडन ने कांग्रेस से जुड़ने के समय कहा कि "मैं सिर्फ हिंदी के विकास के लिए इससे जुड़ा हूँ।"

राजर्षि टंडन हिंदी के प्रति अत्यधिक समर्पित थे। उन्होंने सन् 1910 के लगभग नागरी प्रचारिणी सभा काशी में हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की, जिसके संदर्भ में गाँधीजी का नाम भी जोड़ा जाता है।

राजर्षि टंडन ने हिंदी विद्यापीठ और हिंदी रक्षक संघ की स्थापना भी की।

राजर्षि टंडन ने हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने हेतु महत्त्वपूर्ण प्रयास किए। उनके अनुसार हिंदी राष्ट्रभाषा हो सकती थी, क्योंकि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

हिंदी में सहजता, सरलता और अनुकूलन की स्थिति मौजूद थी।

हिंदी को माँ का दर्जा देने वाले राजर्षि टंडन ने हिंदी के प्रति सदैव राष्ट्रीयता पैदा करने वाला भाव रखा। इसी आधार पर आगे चलकर हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया और हिंदी के उत्थान एवं प्रसार हेतु कार्य किए गए।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

रहीम अकबर के दरबारी सहायक एवं सेनापति थे, परंतु उनकी ख्याति उनकी कृष्णभक्ति काव्य के कारण है।

कबीर कृष्णभक्ति धारा में मुख्यतः ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली हिंदी में काव्य रचना में भूमिका निभा रहे थे।

वस्तुतः रहीम की अधिकांश रचनाएँ ब्रजभाषा में ही थी, परंतु मदनाष्टक में खड़ी बोली हिंदी का स्पष्ट प्रयोग दिखाई देता है।

प्रारंभ में खड़ी बोली हिंदी का स्वरूप पुरानी हिंदी से मिलता-जुलता था, जिसे रहीम के दोहों से जान सकते हैं।

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।।"

"रहिमन ओछे नरन ते, बैर भली न प्रीति।
काटे चाटे स्वान के, दोऊ भाँति विपरीत।"

उक्त दोहों में रहीम द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली हिंदी के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मिश्रण को देखा जा सकता है।

खड़ी बोली हिंदी के शुरुआती विकास में रहिम का भी योगदान मदनाष्टक द्वारा देखा जा सकता है। यही खड़ी बोली 20 वीं सदी में व्यापक स्तर पर राष्ट्र की भाषा बन गई।

6

10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ङ) 'मारवाड़ी' बोली

हिंदी की उपभाषाओं में राजस्थानी उपभाषा को चार भाषाओं में बाँटा गया है। मारवाड़ी इनमें से एक है।

~~में~~ बोली जाती है मुख्यतः मारवाड़ी राजस्थान में बोली जाती है तथा इसे बोलने वाला वर्ग व्यापारी एवं धनी वर्ग है। अतः मारवाड़ी विस्तृत रूप में भारत के कई हिस्सों में फैली और उन क्षेत्रों की बोलियों से भी कुछ ~~तत्व~~ आत्मसात् किए।

<u>विशेषताएँ :</u>

1.) मराठी भाषा से 'ळ' को सम्मिलित किया गया (जैसे- बाळ, बादळी)

~~(क) ...~~

2.) महाप्राण व्यंजनों का अल्पप्राण व्यंजनों में परिवर्तन

जैसे : हाथ > हात

3.) 'न' वर्ण के स्थान पर 'ण' वर्ण का प्रयोग

जैसे : पानी > पाणी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

4.) 'ओकारांत' शब्दों का बहुतायत प्रयोग
(जैसे - गयो, आयो)

उक्त आधार पर मारवाड़ी भाषा की विशेषताओं को समझा जा सकता है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) स्वतंत्रता-आन्दोलन के दौर में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के विकास में महात्मा गाँधी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ महात्मा गाँधी हिंदी के विकास के लिए अग्रणी व्यक्तियों में से एक थे। उनके अनुसार हिंदी में राष्ट्रभाषा बनने के सभी गुण विद्यमान थे।
गाँधीजी के अनुसार किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने हेतु कुछ गुण अनिवार्यत: उस भाषा में उपस्थित होने चाहिए:

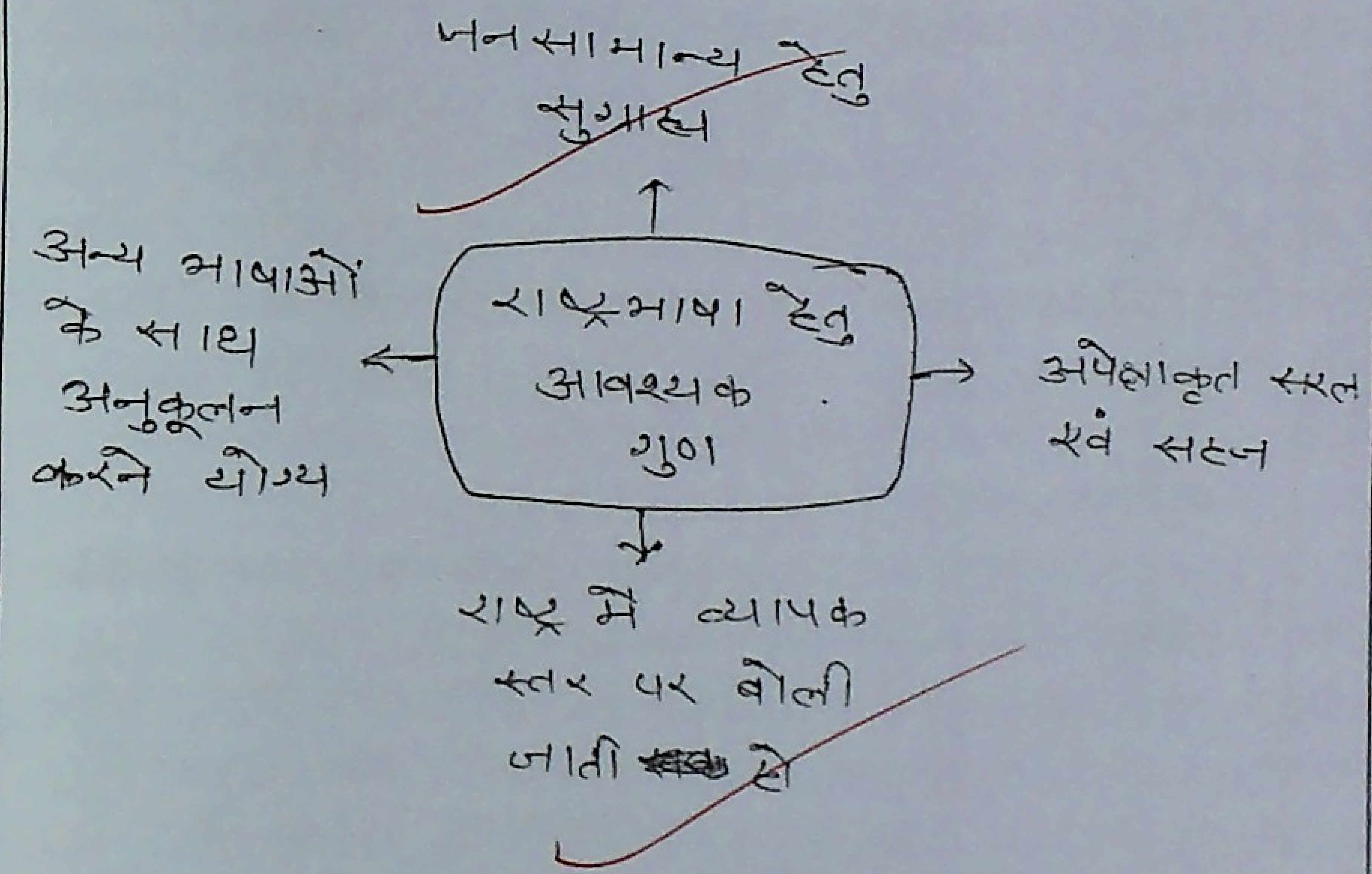

उक्त सभी गुण हिंदी में विद्यमान थे। अत: गाँधी के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जा सकता था, न कि अंग्रेजी को।

Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गाँधी ने सन् 1918 में नागरी प्रचारिणी सभा के इंदौर सम्मेलन में एक भाषण दिया, जिसके बाद अहिंदी भाषी प्रदेश भी हिंदी के प्रति मुखर तौर पर सक्रिय हुए।

इसके बाद कांग्रेस जैसी संस्थाओं के कार्य, पत्राचार, आदेश जैसे सभी कार्य हिंदी में किए जाने लगे।

गाँधी के भाषणों से प्रेरित होकर हिंदी उत्तर भारतीय क्षेत्र से बाहर भी प्रसारित होने लगी। दक्षिण भारतीय क्षेत्रों में भी हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने हेतु नेताओं और राष्ट्रवादियों ने पहल प्रारंभ कर दी।

इसी आधार पर दक्षिण भारत में स्वतंत्र हिंदी प्रचार सभा का निर्माण हुआ।

तत्पश्चात् हिंदी को विद्यालयों, कॉलेजों में पढ़ाए जाने हेतु कार्य किया जाने लगा।

वस्तुतः इन्हीं आधारों पर हिंदी जनमानस की भाषा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

बनकर उभरी। स्वतंत्रता संग्राम में आंदोलनों को राष्ट्रीय स्तर पर उभारने हेतु एवं जनसामान्य को एकीकृत करने हेतु हिंदी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

गाँधी द्वारा हरिजन नामक पत्रिका भी हिंदी में प्रकाशित की गई।

गाँधी द्वारा साबरमती आश्रम में होने वाले भजनों की भाषा को भी अनिवार्यतः हिंदी रखा गया, जो व्यावहारिक तौर पर हिंदी के प्रति समर्पण को दर्शाता है।

"वैष्णव जन तो तैने कहिये,
जे पीर पराई जाने रे।"

वस्तुतः गाँधी हिंदुस्तानी हिंदी स्वरूप को भारत की जनभाषा बनाने के पक्ष में थे।

हिंदी के प्रति लगाव इस बात से भी देखा जा सकता है कि उन्होंने अपने पुत्र को हिंदी प्रसार-प्रचार हेतु तमिलनाडु

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भेजा।

वस्तुत: गाँधी द्वारा दिए गए भाषण, चाहे वह हिंदी साहित्य सम्मेलन में हो या वाराणसी हिंदी विश्वविद्यालय में, सभी में हिंदी के प्रति एक लगाव एवं समर्पण का भाव निहित था; जो इसी आधार पर भारत की जनभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को संपूर्ण भारतीय पटल पर उभार सका और भारत में उसकी स्वीकार्यता को मजबूत बना सका।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मानक हिन्दी की वचन-संरचना पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी का विकास उत्तरोत्तर तौर पर संस्कृत से माना जाता है। जिसके प्रारंभिक चरणों में पालि, प्राकृत, अपभ्रंश / अवहट्ठ का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

मुख्यत: संस्कृत में वचन को 3 भागों में विभक्त किया गया है:

1.) एकवचन
2.) द्विवचन
3.) बहुवचन

परंतु विकास प्रक्रिया में पाली से ही द्विवचन का लोप होना प्रारंभ हो गया, जो अंतत: हिंदी के स्तर पर 2 प्रकार का रह गया।

(I) एकवचन
(II) बहुवचन

हिंदी में द्विवचन से संबंधित युक्तियों को प्राय: बहुवचन में समाहित किया गया, जिससे भाषा की जटिलता में कमी आई एवं हिंदी अपेक्षाकृत सरल एवं सहज बन गयी।

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

लिंग के आधार पर वचन पर प्रभाव

पुल्लिंग

→ अकारान्त शब्द, बहुवचन में एकारान्त बन गए।

जैसे → वह > वे

→ आकारान्त शब्द प्रायः एकारान्त शब्द बन गए।

जैसे → ~~लड़का~~ लड़का - लड़के

→ बहुवचन बनाने हेतु ~~शब्द~~ शब्दों में अन प्रत्यय जुड़ा।

जैसे : बेटा - बेटन

स्त्रीलिंग

→ आकारान्त शब्दों में एँ जुड़कर बहुवचन बना।

जैसे : वीणा → वीणाएँ

→ ईकारान्त शब्दों में याँ जोड़कर बहुवचन बना।

जैसे : रानी → रानियाँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

~~उपसंहार~~

उक्त आधार पर वचनों को हिंदी के माध्यम से परिभाषित एवं व्याख्यायित किया जा सकता है। मुख्यतः द्विवचन का लोप इसके (भाषा के) सरलीकरण में अहम रहा।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) कबीरेतर संतकवियों के साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक स्वरूप का विवेचन कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संतकवियों के साहित्य का प्रवर्तक कबीर को माना जाता है, जिन्होंने काव्य रचना हेतु खड़ी बोली से मिलती-जुलती भाषा का प्रयोग किया है।

"जो बिछुड़े हैं पियारे से, भटकते हैं दर-बदर फिरते
हमारा यार है हममें, हमन को इंतजारी क्या।"

उक्त छंद में 'हमन' शब्द खड़ी बोली से मिलता-जुलता शब्द है।

~~कबीर के बहुवाद~~

संत साहित्य जिस भाषा में लिखा गया उसे पंचमेल खिचड़ी या सधुक्कड़ी भाषा कहा गया। इसका अर्थ होता है विभिन्न भाषाओं का मिश्रण।

कबीर के पश्चात् 17वीं शताब्दी के आस-पास मलूकदास का यह छंद उस समय प्रचलन में प्रयुक्त भाषा के बारे में बताता है, जो कमोबेश खड़ी बोली के सदृश जान पड़ती है:

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

"अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम,
दास मलूका कह गए सबके दाता राम।"

खड़ी बोली से काफी हद तक मिलती-जुलती भाषा का प्रयोग संत साहित्य में किया गया। इसकी व्याकरण पूर्णतः खड़ी बोली हिंदी की है।

इसी प्रकार रीतिकालीन काव्य में पलटू साहब, यारी साहब, दरिया साहब जिस भाषा में लिख रहे थे, वह खड़ी बोली के काफी नजदीक प्रतीत होती है:

"जात हमारी ब्रह्म है, मात-पिता है राम,
गिरह हमारा सुन्न है, अनहद में बिसराम।"

इसमें खड़ी बोली के सदृश अकारांतकता को देखा जा सकता है। साथ ही अधिकरण कारक के साथ 'में' का प्रयोग भी खड़ी बोली हिंद का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस प्रकार, कबीरेतर संत साहित्य के माध्यम से खड़ी बोली हिंदी के प्रयोग की जानकारी एवं विकास का क्रम प्रतीत होता है।

Good 9/15

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी मानी गई है। वस्तुत: इसका आशय संस्कृत जैसी देववाणी / सभ्य भाषा की लिपि से है। देवनागरी लिपि प्रमुखत: एक वैज्ञानिक लिपि सदृश प्रतीत होती है; परंतु कुछ इसकी सीमाएँ भी हैं।

सीमाएँ:

1.) मुख्यत: इस लिपि में वर्णों की बनावट जटिल प्रतीत होती है।

जैसे: अ, ज

2.) कुछ आलोचकों के अनुसार देवनागरी लिपि में प्रयुक्त मात्राएँ कभी आगे, कभी पीछे, कभी ऊपर, कभी नीचे होती हैं, जो इसे जटिल स्वरूप प्रदानी करती है।

यथा: उ → ु
ई → ी

3.) कुछ शब्दों में 'र' को संयुक्त रूप से, तो कुछ में 'रेफ' के रूप में लिखा जाता है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे: कर्म
प्रतिज्ञा

4.) संयुक्त वर्णों का प्रयोग लिपि को असहज बनाता है।

जैसे: स्न, त्र

5.) कई वर्णों का उच्चारण एक जैसा प्रतीत होता है।

जैसे: रि, ऋ

6.) कुछ वर्णों के उच्चारण में अंतर स्पष्ट रूप से प्रतीत नहीं होता।

जैसे: ष, श, स
व, ब

7.) कुछ वर्णों को प्रदर्शित करने हेतु एक से अधिक प्रकार

जैसे: झ > झ
अ > अ

8.) 'हलन्त' का प्रयोग पूर्णतः स्पष्ट नहीं। कई वर्णों में प्रयोग करते हैं तथा कई में नहीं।

जैसे: जगत > जगत्

9.) टाइपिंग करने में जटिल। वस्तुतः विभिन्न मात्राओं को प्रदर्शित करने हेतु लगभग 400 प्रकारों की आवश्यकता होती है।

10.) ~~वस्तुतः~~ देवनागरी लिपि में वर्णों की संख्या अन्य लिपियों की तुलना में अधिक है।

11.) कई स्वरों को ~~[illegible]~~ पूर्ण शब्दों के स्थान पर सिर्फ मात्राओं के रूप में लिखा जाना चाहिए।

जैसे: ओ > ो

12.) कुछ आलोचकों के अनुसार मात्राभेद भी पूर्णतः स्पष्ट नहीं है और एक ही मात्रा उच्चारण के लिए एक से अधिक मात्राओं का प्रयोग किया जाता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे: ~ . ~

(3) कई मात्राओं का प्रयोग पहले तथा उच्चारण बाद में होता है। जैसे 'इ' के लिए मात्रा 'ि' का प्रयोग पहले व उच्चारण बाद में होता है।

इन सीमाओं में कई सीमाएँ निराधार और अप्रमाणिक हैं। वस्तुतः कुछ सीमाओं को दूर करके हिंदी को सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा बनाया जा सकता है।

12/20

V. good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

अवधी मुख्यतः अवध प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा है। यह जनमानस की भाषा है, जिसका विकास अर्द्धमागधी प्राकृत से हुआ है। वस्तुतः इस प्रदेश को भक्तिकाल में कोसल प्रदेश के नाम से जाना जाता था। यहाँ विकसित भाषा कोसली के नाम से जानी गई। आगे चलकर इसी का विकसित स्वरूप अवधी कहलाया।

मुख्यतः अवधी काव्यभाषा की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी, परंतु इसे व्यापक विस्तार तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से मिला।

वस्तुतः कुछ रचनाएँ जैसे- चन्दायन, पद्मावत भी अवधी में ही लिखी गई हैं।

रामभक्ति काव्यधारा की काव्य रचना के लिए अवधी का प्रयोग इसका मुख्य विस्तार का केंद्र रहा। अवध प्रदेश राम के मिथक से जुड़ा है। अतः यह भाषा मूल/ठेठ अवधी बोली को समाहित किए हुए थी, जिससे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जनमानस के मस्तिष्क पटल पर अवधी एक विस्तृत रूप में छा गई।

विशेषताएँ :

1.) उचित विराम, प्रवाह समाहित किए हुए है, जो काव्य रचना को ग्राह्य बनाता है।

2.) अवधी में पर्याप्त ध्वनि-सूत्र का गुण भी है। अत: अवधी काव्य गेयता की दृष्टि से भी प्रासंगिक है।

3.) अवधी की मुख्य क्षमता उसकी प्रबंध को/ बाँधने की क्षमता है। अत: कई प्रबंधकाव्य अवधी में लिखे गए हैं।

4.) अवधी रामकाव्य धारा से जुड़ने के कारण धार्मिक एवं संस्कारित स्वरूप लिए हुए है। इसमें ब्रजभाषा जैसी तीव्रता एवं लालित्य का प्राय: अभाव है।

व्याकरणिक विशेषताएँ:

→ अवधी में मुख्यत: वर्तमान काल हेतु 'त' विभक्ति (जैसे- चलत), भविष्यकाल हेतु 'ब'- विभक्ति

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(जैसे- जाइब) और भूतकाल हेतु 'व'- विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

→ कुछ सर्वनामों का प्रयोग भी यहाँ पर दिखाई देता है। (जैसे- मोसे)

→ प्राय: 'हि' परसर्ग का प्रयोग कई कारक विभक्तियों में किया गया है (जैसे- चलहि)

वस्तुत: अवधी का प्रयोग काव्य में औदात्यपूर्ण, संस्कारित एवं प्रबंधकीय भाषा के रूप में हुआ है। इसी पर इसका व्यापक विस्तार हुआ तथा इसी कारण यह इस काव्य की सीमा भी बन गई।

9/11

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली गद्य के विकास में 'फोर्ट विलियम कॉलेज' की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 में सिविल सेवकों को भारतीय भाषाओं में शिक्षित करने हेतु की गई थी।

वस्तुतः इसके हिंदी विभाग के प्राध्यापक जॉन गिलक्राइस्ट ने इस क्षेत्र में कार्य किया एवं हिंदी को ग्राह्य एवं सहज रूप में प्रस्तुत करने हेतु कुछ अन्य लोगों का साथ लिया। इनमें 4 व्यक्ति प्रमुख हैं:

	रचना
(i) इंशा अल्ला खाँ	→ रानी केतकी की कहानी
(ii) सदल मिश्र	→ नासिकेतोपाख्यान
(iii) सदासुखलाल	→ सुखसागर
(iv) लल्लू लाल	→ प्रेमसागर

इंशा अल्ला खाँ हिंदी के शुरुआती दौर के कहानीकार थे। वस्तुतः इनकी भाषा हिंदी के शुद्ध रूप के आस-पास बैठती है।

वहीं लल्लू लाल की भाषा अन्य भाषाओं (जैसे-फारसी) से हटकर प्रतीत होती है।

• 19 वीं सदी के अंत में फोर्ट विलियम

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कॉलेज हिंदी के विकास हेतु अप्रतिम साबित हुआ।

साथ ही हिंदी भाषा के नए-नए प्रयोगों के कारण हिंदी का सरलीकरण हुआ और यह विदेशी तत्वों (जैसे-फारसी) को समाहित करने लगी।

इसी आधार पर जो सिविल सेवक फोर्ट विलियम कॉलेज से भारतीय भाषाओं को सीख रहे थे, उन्हें हिंदी अधिक ग्राह्य मालूम हुई।

शुरुआती दौर में व्याकरणिक अशुद्धियाँ कई जगह (जैसे- ग्रंथों के हिंदी अनुवाद में) मिलती रहीं, परंतु हिंदी जनाधार व्यापक करने एवं जनमानस की भाषा बनाने में यह दौर और मुख्य तौर पर फोर्ट विलियम कॉलेज की भूमिका उल्लेखनीय रही।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सिद्ध परंपरा बौद्ध धर्म की एक परंपरा है, जो हिंदू धर्म से प्रभावित है। मुख्यतः इसमें तंत्र-मंत्र पर विशेष बल दिया जाता था। सिद्ध परंपरा के अनुयायी वाममार्गी कहलाए।

→ सिद्ध परंपरा के अनुयायी 8वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य चर्यापदों एवं दोहों के माध्यम से साहित्य की रचना कर रहे थे।

→ मुख्यतः इनकी भाषा अर्द्धमागधी के आस-पास एवं खड़ी बोली के शुरुआती चरण की भाषा जान पड़ती है।

→ सिद्ध साहित्य के माध्यम से आरंभिक खड़ी बोली के कुछ समावेश का पता चलता है।

→ मुख्यतः न के स्थान पर ण का प्रयोग इस साहित्य की प्रमुख विशेषता

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

"घर ही बइसी दीवा जाली। कोणहि बइसी घंटा चाली।"

उपर्युक्त पंक्ति में बइसी, दीवा, कोणहि इत्यादि पद खड़ी बोली के पद हैं।

Good 5½ / 10

दृष्टि The Vision

खण्ड - ख

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सिद्ध परंपरा बौद्ध धर्म की एक परंपरा है, जो हिंदु धर्म से प्रभावित है। मुख्यत: इसमें तंत्र-मंत्र पर विशेष बल दिया जाता था। सिद्ध परंपरा के अनुयायी वाममार्गी कहलाए।

→ सिद्ध परंपरा के अनुयायी 8वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य चर्यापदों एवं दोहों के माध्यम से साहित्य की रचना कर रहे थे।

→ मुख्यत: इनकी भाषा अर्द्धमागधी के आस-पास एवं खड़ी बोली के शुरुआती चरण की भाषा जान पड़ती है।

→ सिद्ध साहित्य के माध्यम से आरंभिक खड़ी बोली के कुछ समावेश का पता चलता है।

→ मुख्यत: न के स्थान पर ण का प्रयोग इस साहित्य की प्रमुख विशेषता

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं:

"घर ही बइसी दीवा जाली। कोणहि बइसी घंडा चाली।"

उपर्युक्त पंक्ति में बइसी, दीवा, कोणहि इत्यादि पद खड़ी बोली के पद हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'कन्नौजी' बोली

कन्नौजी बोली मुख्यत: उत्तर प्रदेश के कन्नौज के आस-पास बोली जाती है। कन्नौजी का विकास शौरसेनी ~~अपभ्रंश~~ प्राकृत के पांचाली प्राकृत से हुआ है। इसीलिए किशोरीदास वाजपेयी ने इसे 'पांचाली' नाम भी दिया है।

प्रमुख जिलों का नामोल्लेख हो

कन्नौजी बोली की विशेषताएं:

1.) अवधी की तरह 'उकारांत' शब्दों की प्रमुखता

जैसे: चलु

2.) ऐ, औ के स्थान पर संयुक्त स्वर 'अय', 'अउ'

जैसे: गयउ

3.) स्त्रीलिंग शब्द निर्माण हेतु 'इया' प्रत्यय

जैसे: बेटा → बिटिया

4.) ~~महाप्राण~~ अल्पप्राण ध्वनियों को महाप्राण ध्वनियों में परिवर्तन

जैसे हात → हाथ

5.) 'ण' के स्थान पर 'न' का प्रयोग प्रमुखत:

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे: बाण → बान

6.) 'ण' के स्थान पर कई जगह 'ड़' का प्रयोग

जैसे: रावण → रावड़

7.) शब्द प्राय: ल्ह, म्ह से प्रारंभ

जैसे: ल्हसुन, म्हैट

8.) 'व' के स्थान पर 'उ' का प्रयोग

जैसे: बसावट → बसाउट

इन आधारों पर कन्नौजी की काफी विशेषताएं अवधी सदृश प्रतीत होती हैं। परंतु कुछ मात्रा में कन्नौजी विशिष्ट स्वरूप लिए हुए है।

और

5½ / 10

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विकारी और अविकारी पद

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सामान्यतः हिंदी पद व्यवस्था में अथवा वाक्य निर्माण व्यवस्था में पदों को मुख्यतः 2 भागों में विभक्त किया जा सकता है।

पद
→ विकारी पद
→ अविकारी पद

विकारी पद : सामान्यतः विकारी पद वे पद हैं, जो लिंग, वचन एवं काल आदि की दृष्टि से वाक्य में ~~परिवर्तित~~ अपने स्वरूप में परिवर्तन व्यक्त करते हैं।

→ वस्तुतः विकारी पदों को हिंदी में 4 भागों में विभक्त किया जा सकता है:

(i) संज्ञा
(ii) सर्वनाम
(iii) क्रिया
(iv) विशेषण

उदाहरण: राम जाता है।
सीता जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अविकारी पद : हिंदी वाक्य निर्माण के दृष्टिकोण से वे पद जो लिंग, वचन, भाव, वाच्य, काल इत्यादि की दृष्टि से अपरिवर्तनीय होते हैं, उन्हें अविकारी पद कहा जाता है।

→ अविकारी पदों को सामान्यतः अव्यय भी कहा जाता है। इन्हें निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है:

(i) परिमाणबोधक / समुच्चयबोधक
(ii) संबंधबोधक
(iii) क्रिया विशेषण
(iv) विस्मयादिबोधक

उदा० अरे! वह देखो राम जा रहा है।

अरे! वे लड़कियाँ कहाँ जा रही हैं?

Scanned with OKEN Scanner

(घ) 'ब्रजभाषा' की व्याकरणिक विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

ब्रजभाषा मुख्यत: ब्रज प्रदेश (मथुरा के निकट) की भाषा रही है। ब्रजभाषा का संबंध कृष्णकाव्यधारा से जोड़ा जाता रहा है। मुख्यत: ब्रजभाषा तीव्र, माधुर्ययुक्त, लालित्य युक्त भाषा है, जिसमें गेयता के तत्त्व भी पर्याप्त हैं।

व्याकरणिक विशेषताएँ:

→ मुख्यत: शौरसेनी प्राकृत से उद्भव

→ भविष्य काल हेतु 'ग' विभक्ति (जैसे - चलैगो), भूतकाल हेतु 'औ' विभक्ति (जैसे- आयौ) एवं वर्तमानकाल हेतु 'त' विभक्ति (जैसे- चलत) का प्रयोग

→ बहुवचन बनाने हेतु 'अन' प्रत्यय का प्रयोग

जैसे- दीन - दीनन

→ स्त्रीलिंग हेतु इकारान्त शब्दों का प्रयोग

→ सर्वनाम की दृष्टि से पर्याप्त प्रयोग मिलते हैं।

जैसे - मेरौ, तेरौ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ कारक विभक्ति हेतु पर्याप्त प्रयोग मिलते हैं। साथ ही 'हि' परसर्ग को प्रयोग सभी संदर्भों में किया जाता था।

जैसे - चलहि

मुख्यत: ब्रजभाषा का व्याकरणिक स्वरूप अवधी से मिलता-जुलता प्रतीत होता है; परंतु लालित्य व सौंदर्य, माधुर्य की अधिकता के कारण यह व्यापक स्तर पर पहुँचने में सफल रही।

Good 5½/10

Scanned with OKEN Scanner

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

हिंदी व्याकरण के अध्ययन हेतु कई ग्रंथ लिखे गए; परंतु केलॉग का व्याकरण-ग्रंथ सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

विशेषताएं:

→ व्याकरणिक विशेषताएं बताने के लिए प्रयुक्त किए गए सभी उदाहरण लिखित कृतियों से लिए गए हैं, ताकि प्रमाणिकता बनी रहे।

→ विदेशी व्यक्तियों द्वारा लिखि गई कृति / रचनाओं से प्रायः दूरी बनाई गई है; क्योंकि उनमें त्रुटि होने की संभावना होती है।

→ हिंदी में प्रयुक्त कुछ लिपियों का वर्णन मिलता है।
जैसे: नागरी, कैथी

→ हिंदी के साथ-साथ अवधी एवं ब्रजभाषा की समझ भी विकसित हुई है।

→ मुख्यतः यह व्याकरण ग्रंथ हिंदी और उर्दू की व्याकरणिक गठन की समानता को ध्यान में रखकर ~~लिखा~~ निर्मित किया गया है।

→ भारत में बोली जाने वाली हिंदी का पूर्ण ज्ञान विकसित करने में सहायक।

अतः कह सकते हैं कि केलॉग का व्याकरणिक ग्रंथ सामासिकता लिए हुए एक व्यापक प्रमाणित ग्रंथ ठहरता है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

6. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

अवधी भाषा मुख्यतः उत्तर प्रदेश के अवध प्रांत के हिस्से में बोली जाने वाली भाषा है। अवधी का उदय प्रमुखतः मागधी अपभ्रंश से माना जाता है।

अवधी भाषा का प्रथम प्रमाण मुल्ला दाऊद की कृति चंदायन या लोरिकहा से प्राप्त होता है। इस कृति ने अवधी को काव्यभाषा के पटल पर प्रस्तुत किया।

इसके पश्चात् अवधी भाषा में मलिक मोहम्मद जायसी कृत पद्मावत का नाम प्रमुखतः लिया जाता है।

→ पद्मावत की भाषा अवधी है। साथ ही यह पूर्णतः ग्राह्यता प्रदर्शित करती है (जनमानस के प्रति)।

→ अवधी का स्वरूप काव्य भाषा के रूप में जायसी के काव्य ग्रंथ के आधार पर और व्यापक एवं विस्तृत हो गया।

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ अवधी के विकास से कालान्तर में कई साहित्यों में लोकभाषा अवधी को महत्त्व मिलने लगा।

→ अवधी में मुख्यतः 'उकारान्त' शब्दों का प्रचलन बहुतायत हुआ (जैसे- लागु, चलतु)।

→ चूंकि पद्मावत ठेठ अवधी भाषा को समेटे हुए थी। अतः यह जन सामान्य को आत्मसात करने में सहायक हुई।

→ अवधी को प्रेमाख्यान की भाषा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

"सब तन जारौ धारि के कहौं कि पवन उड़ाय"

अतः ध्वनि पद्मावत से ली है। इसमें ठेठ अवधी का प्रमाण परिलक्षित होता है।

→ जायसी द्वारा अवधी का प्रयोग प्रेमवर्णन में किया गया, तो वहीं तुलसी द्वारा अवधी का प्रयोग भक्तिधारा और राम-भक्ति काव्यों में किया गया।

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ जायसी के बाद अवधी का प्रयोग कई कवियों ने अपने काव्य में भाषा के तौर पर किया है।

→ उस्मान की चित्रावली, कासिम शाह की नूर जवाहर इत्यादि में अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।

→ अवधी भाषा की प्रमुख विशेषता उसकी मिठास है। इसी आधार पर काव्य रचना को विस्तृत एवं अधिक जन सुग्राह्य बनाने हेतु अवधी का प्रयोग किया गया।

→ अवधी की लयात्मकता भी अवधी के विकास में सहायक हुई।

→ कई कृतियों में अवधी और ब्रजभाषा के साथ-साथ खड़ी बोली के मिश्रित रूप का प्रयोग किया जाने लगा।

जैसे: अमीर खुसरो का यह पद:

" मेरो मोसे मान बढ़ावत, पास बैठ x x

x xx , क्यों सखी साजन, ना सखी शिशा।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ अवधी के प्रयोग मध्यकाल के बाद से वर्तमान काल तक साहित्य में होते रहे हैं।

अवध प्रदेश सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कवियों की जननी रहा है।

परंतु जिस प्रकार तुलसीदास कृत रामचरितमानस में अवधी का काव्यभाषा के रूप में प्रयोग हुआ, उसने अवधी को एक नए आयाम तक पहुँचाया। फलतः अवधी लोकमंगल की भाषा बन गई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Scanned with OKEN Scanner

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान तमिलनाडु में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्वाधीनता आंदोलन के दौरान गांधी के भाषणों से कई अहिंदी प्रांत भी हिंदी के विकास हेतु प्रेरित हुए।

इसी क्रम में हिंदी के विकास हेतु गांधी ने अपने पुत्र देवदास गांधी को तमिलनाडु भेजा। तत्पश्चात लगभग 2 महीने के बाद स्वामी सत्यदेव भी वहां उनकी सहायता के लिए आए।

तमिलनाडु में हिंदी प्रसार हेतु स्वतंत्र दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का शुभारंभ किया गया। इसके बाद इसकी शाखाएँ दक्षिण भारत में अन्यत्र भी खोली जाने लगीं।

→ ईरोड और मदुरै हिंदी के प्रमुख केंद्र बनकर उभरे।

→ तमिलनाडु में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी सम्मेलन आयोजित किए जाने लगे। हिंदी में लेख लिखे जाने लगे।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ हिंदी प्रसार हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने भी सहयोग किया।
जैसे: ई वी रामास्वामी आयंगर

→ हिंदी के प्रसार हेतु कॉलेज, विद्यालयों में हिंदी का पाठ करवाने हेतु कई प्रयास किए गए।

→ युवाओं द्वारा यात्राएँ, सभाएँ और जन जागरुकता जैसे प्रयास किए गए।

→ हिंदी की सुग्राह्यता एवं अनुकूलनशीलता को ध्यान में रखकर कई शब्दावलियों को स्थानीय भाषा से हिंदी भाषा में आत्मसात किया जाने लगा।

→ हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हुआ और हिंदी का प्रसार इतना व्यापक हो गया कि एक स्वतंत्र प्रेस हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन हेतु खोलना पड़ा।

→ हिंदी का प्रयोग करने में कांग्रेस ने अग्रणी भूमिका निभाई और सारे

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Scanned with OKEN Scanner

पत्राचार, आदेश इत्यादि हिंदी में प्रसारित होने लगे।

→ हिंदी प्रेमी मंच की स्थापना भी एक महत्त्वपूर्ण कदम था।

→ हिंदी को प्रश्रय दिया जाने लगा; क्योंकि हिंदी सरल, सहज और राष्ट्रीयता की भावना को समेटे हुई थी।

वस्तुतः तमिलनाडु राज्य के साथ-साथ अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों (जैसे-केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश) में भी हिंदी प्रसार हेतु कार्य किया जाने लगा, जो राष्ट्रीयता के लिए उपयुक्त साबित हुआ।

8/15

Scanned with OKEN Scanner

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

हिंदी भाषा के व्याकरण का विस्तार विभिन्न बोलियों के समायोजन, आत्मसातीकरण से हुआ है।

हिंदी के व्याकरण में कुछ बोलियों (विशेषतः अवधी और ब्रजभाषा) का योगदान अद्वितीय रहा है।

हिंदी के व्याकरणिक संदर्भों को इन बोलियों से तुलना करने पर कुछ समानताएँ परिलक्षित होती हैं।

1.) सभी बोलियों में लिंग केवल दो माने गए हैं। (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग)

2.) वस्तुतः वचन के आधार पर भी सभी बोलियाँ 2 वचनों को मानती हैं

→ एकवचन

→ बहुवचन

प्रायः बोलियों में एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम अलग-अलग प्रतीत होते हैं;

जैसे : अवधी में → किताब : किताबन

खड़ी बोली → किताब : किताबें

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें (Please don't write anything in this space)

3.) खड़ी बोली में प्रयुक्त सर्वनाम मानक हिंदी में प्रयुक्त सर्वनामों (..., ...); जबकि अन्य बोलियों (जैसे: अवधी, ब्रजभाषा) में कुछ नए सर्वनामों का प्रयोग किया जाता है।

<u>जैसे</u>: ब्रजभाषा : हमारो

अवधी : ~~...~~ मोअ

4.) कारक विभक्तियों में प्राय: 'हि' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है।

जैसे : आवहि

5.) कुछ बोलियों में शब्द अधिकतर 'उकारांत', तो कुछ बोलियों में 'ओकारांत' होते हैं।

अवधी में : चलतु

ब्रजभाषा में : गयो

6.) काल की दृष्टि से नियमों में कुछ समानता तो कुछ अलगाव मिलता है। ~~...~~

~~शब्द में~~ ~~एक~~ ~~क~~

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7.) कुछ बोलियों में क्रिया का प्रयोग एक जैसे तरीकों से होता है ~~...~~। अर्थात् क्रिया का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है।

उक्त आधारों पर हिंदी की विभिन्न बोलियों में कुछ समानता, तो कुछ अलगाव भी है; परंतु ये बोली मानकीकरण में महत्वपूर्ण रूप से सहायक हुई हैं।

7½/15

और बेहतर बनाएँ

Scanned with OKEN Scanner